रात्रि क्लास 1.7.68 :– बच्चे समझते हैं हमारे सभी दुःख दूर होने वाले हैं; क्योंकि बेहद का बाप मिला है तो सभी मनुष्यों के दुःख दूर हो जाते। देवताएँ तो है ही सुखधाम के मालिक। बाकी थोड़ा समय है। याद की यात्रा में कमजोर हैं। जितना हो सके बाप को याद करना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हर्षित रहते हैं। जितना बाप को याद कर वरसे को याद करते हैं उतना ही दिल में खुशी होती है। यह भी बच्चा है ना। तो जो इनके संबंधी होंगे वा प्रजा सभी खुश। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। एवर हैपी बनते हैं ना। माताएँ तो और ही खुश होती है। माताओं को पहले पुरुषों को पीछे रखते हैं। ल0 बनना है तो भी एक बात, ना0 बनना है तो भी एक बात और ही माताओं का जास्ती मान है। पहले ल0 पीछे ना0। तुम पुराने आशुक हो मुझ माशुक के। याद करते हो वर्सा पाने के लिए। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद बाबा आते हैं विश्व का मालिक बनाने। यह जो नालेज मिलती है वह फिर इमर्ज हो जाती है। फिर चक्र फिरता रहेगा। जो होता है रोल होता जाता है। यह सभी समझने की बातें हैं। कितना बड़ा बेहद का रोल है। इसको कुदरत ही कहेंगे। किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। अभी तुम बच्चों की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। पवित्र आत्मा बन जाते हो। बाप सभी बच्चों को तृप्त कर देते हैं। तो इसमें खुशी होनी चाहिए। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। अभी तो अजन तमोप्रधान से तमो में आये हैं। तमोप्रधान खत्म हो गया जब ब्राह्मण बने फिर है तमो..... सतो में आना। सतोप्रधान तक पहुँचना जरूर है। हरेक बच्चे जानते हैं हम सतो0 थे फिर कैसे सीढ़ी उतरे। अभी जितना सतोप्रधान बनते जावेंगे फिर अमरपुरी में आ जावेंगे। 5000 वर्ष पहले अमरपुरी थी। तो अभी पुरुषार्थ करना है। बीच में माया की लड़ाई भी है। बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए। बाप को देख रोमांच खड़ी हो जानी चाहिए। माताओं को तो और ही जास्ती। कुछ भी न पढ़े हो। कोई भूसा न है तो अच्छा है। बाकी यह तो समझते हो हम आत्मा हैं। हमारा बाप परमात्मा है। यह तो बहुत सहज है। बस बाप को याद करो। एक बार चक्र को समझो फिर विलायत जाओ। दैवीगुण धारण करनी है। भोजन किसके हाथ का मिलता है कोई हर्जा नहीं है। याद के बल से तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। यह भोजन क्या चीज़ है। बाबा से पूछते रहो। नही तो कोई इन्सल्ट फील करते हैं। तो ऐसा काम न करना .....। यह तो पक्का है बाप समझाते हैं न कि दादा। यह भी समझता है। इनके लिए ही बाप समझाते हैं यह भी समझता है। उनके लिए ही बाप समझाते हैं। इनके बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। रथ चाहिए ना। शिवबाबा को याद कर मिलना है, भाकी पहनना है। यह भी रिवाज निकल जावेगा। ढेर बच्चे हो जावेंगे। आगे चल क्या होता है देखना। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।